

ये-दर्द के खजाने
 वसीहत में मिल गये
 देखा नहीं था खुदाब
 हुकीकत में मिल गये
 उभरे हैं दर्द मेरे.

नया लुफ्त सा लेकर
 की थी न खता मैंने
 नसीहत में मिल गये

ये दर्द के ----- देखा नहीं -----

अब दर्द जरा सुन ले
 तुझको कसम मेरी
 क्या बात कहें तुमसे-तुमसे
 मुसीबत में मिल गये

ये दर्द के ----- देखा नहीं -----

हैं जब तलवा, ये जिन्दगी
 रहूँ साथ में तेरे

क्या-खूब रही दोनों-दोनों
 फज़ीहत में मिल गये

ये दर्द के --- देखा नहीं ---

दर्दों का तूने मुझको

सरताज बनाया

सारे-जहाँ के दर्द

रियासत में मिल गये

ये दर्द के-----देखा नहीं-----

अब भी न समझ पाये हमें

क्या कहें यारो

लगता है, दर्द- लोहफा-लोहफा

ईबादत में मिल गये

ये दर्द के-----देखा नहीं-----

अब- बैसुमार- दर्द लेकर

जी रहे "श्री बाबा श्री"

कुद् और नये दर्द

लियाकत में मिल गये-

ये दर्द के-----देखा नहीं-----